यामुनार्य सुधाम्भोधिमवगाह्य यथामति
आदाय भक्तियोगाख्यं रत्नं सन्दर्शयाम्यहम्

स्वाधीन त्रिविध चेतनाचेतन स्वरूप स्थिति प्रवृत्ति भेदं, क्लेश कर्माद्यशेष दोषासंस्पृष्टं, स्वाभाविक अनवधिकातिशय ज्ञान बलैश्वर्य वीर्य शक्ति तेजः प्रभृति असंख्येय कल्याण गुणगणौघ महार्णवं, परमपुरुषं, भगवन्तं, नारायणं, स्वामित्वेन, सुहृत्त्वेन, गुरुत्वेन च परिगृह्य, ऐकान्तिक आत्यन्तिक तत्पादाम्बुजद्वय परिचर्यैक मनोरथः, तत्प्राप्तये च तत्पादाम्बुजद्वय प्रपत्तेः, अन्यन्न मे कल्पकोटि सहस्रेणापि साधनमस्तीति मन्वानः, तस्यैव भगवतो नारायणस्य, अखिलसत्त्व दयैक सागरस्य, अनालोचित गुणागुण अखण्ड जनानुकूल अमर्याद शीलवतः, स्वाभाविक अनवधिकातिशय गुणवत्तया देवतिर्यङ्मनुष्याद्यखिलजन हृदयानन्दनस्य, आश्रित वात्सल्यैकजलधेः, भक्तजन संश्लेषैक भोगस्य, नित्य ज्ञानक्रियैश्वर्यादि भोगसामग्री समृद्धस्य, महाविभूतेः, श्रीमच्चरणारविन्दयुगलं अनन्यात्म सञ्जीवनेन तद्गत सर्वभावेन शरणमनुव्रजेत्!!

ततश्च, प्रत्यहं आत्मोज्जीवनायैवमनुस्मरेत्!

चतुर्दश भुवनात्मकमण्डं, दशगुणितोत्तरं च आवरण सप्तकं समस्तं कार्यकारण जातमतीत्य वर्तमाने, परमव्योम शब्दाभिधेये, ब्रह्मादीनां
वाङ्मनस अगोचरे श्रीमति वैकुण्ठे दिव्यलोके, सनकविधि शिवादिभिः अपि अचिन्त्य स्वभावैश्वर्यैः, नित्य सिद्धैः, अनन्तैः, भगवद् आनुकूल्यैकभोगैः,
दिव्यपुरुषैः महात्मभिः आपूरिते, तेषामपि "इयत् परिमाणं, इयत् ऐश्वर्यं ईदृशस्वभावं" इति परिच्छेत्तुं अयोग्ये, दिव्य आवरण शतसहस्र आवृते,
दिव्य कल्पकतरु उपशोभिते, दिव्योद्यान शतसहस्रकोटिभिः आवृते, अतिप्रमाणे दिव्य आयतने कस्मिंश्चित् विचित्र दिव्य रत्नमय दिव्यास्थान मण्डपे, दिव्य रत्नस्तम्भ शतसहस्रकोटिभिः उपशोभिते, दिव्य नाना रत्न कृतस्थल विचित्रिते, दिव्य अलङ्कार अलङ्कृते, परितः पतितैः पतमानैः पादपस्थैश्च नाना गन्धवर्णैः दिव्य पुष्पैः शोभमानैः दिव्य पुष्प उपवनैः उपशोभिते, सङ्कीर्ण पारिजातादि कल्पद्रुम उपशोभितैः, असङ्कीर्णैश्च कैश्चित्, अन्तस्थ पुष्प रत्नादि निर्मित दिव्यलीला मण्डप शतसहस्र उपशोभितैः सर्वदा अनुभूयमानैः अपि अपूर्ववद् आश्चर्यम् आवहद्भिः,
क्रीडाशैल शतसहस्रैः अलङ्कृतैः, कैश्चित् नारायण दिव्यलीला असाधारणैः, कैश्चित् पद्मवनालया दिव्यलीला असाधारणैः, साधारणैश्च कैश्चित् शुकशारिका मयूर कोकिलादिभिः कोमलकूजितैः आकुलैः दिव्योद्यान शतसहस्रकोटिभिः आवृते, मणिमुक्ता प्रवाल कृतसोपानैः,

दo अम्लमत सेदकैः दo अन जo ैः,अत म दर्शनैः अदमने मधुस्o ैः अकुलैःअन्तस्थ मुक्तम दo क्र स्थन उपशेभतैः,दo सैगन्धक o ट शत स स्रैः,दo ज सoल o जतैः अoते,नस्त तश

अनन्दैकसत च, अनन्त च्च,प्oष्टन् उन्मद द्धःक्र देशैः o जते,तत्र तत्र कत दo पुष्ट ट ङ्क उपशेभते,नन पुष्ट अस्o अस्o द मत्त भङ्गoल भः उद्ग मन दo गन्धैर्o अप ते,चन्दन अगरुकर्प्प दo पुष्ट अoग मन्दनल असेoमने,मद्ये (दo) पुष्ट सच oचत्रते म त दo ेगट ङ्के अनन्तभेगन,श्रमद् oैकुठ ऐश्ठ द दoलेक अत्म कन्त oश्ठ अट न्त शेष शेषचन दक सर्o ट जन भगoत: तत्दु अoस्थेचत ट च अङ्ग ट न्त शलरूपगु oलसदभः अत्मनुरूप श्र स सन, प्रतग्र उन्म लत स सज सदश न नुग स्oच नलजमतसङ्कश, अतुज्ज्oलट त oसस स्o प्रभ अतनर्मल अतशतल अतकेमल स्oच म क भ कत्स्न जगदुद्धस न्त,अचन्त दo द्धुध नत ैoन स्oभo लo म अम्द सग अदसैकुम त् ईषत् प्रस्oत्oद् अलक्ष म लल लक दo अलकoल o जत,प्रबुद्ध मुग्ध बुज चरुलेचन, सoभ्रम भलत, उज्ज्oलध , शुचस्मत, केमल गन उत्स,उदग्र टनस oलब कुनल अलकoल बन्धु कबुकन्ध , प्र oतस उतल क भष श्लथलकबन्ध oम्र्दशसभः चदुर्भः अजनुoलबभर्भुजैः o जत, अतकेमल दo ेखलकत अत कतल,दo ङ्ग क o जत अत केमल दo नखoल o जत,अत क्त ङ्गल भः अलन्कत, तत्क्ष उन्म लत पुन कसदश च ुग ,अतमने क मकु च oतस मक कुन ल ग्रैoे क के ककश्रoत्स कैस्तुभ मुक्तदम उदबन्धन टतब कञ्चगु नपु दभः अत न्दसुख स्पर्शैःदo गन्धैः भष ैः भषत, श्रमत oैजन्त oनमल o जद, शङ्ख चक्र गदस शर्ङ्गद दo ुधैःसेoमन,स्oसङ्कल्प मत्र अoक्लुप्त जगज् जन्म स्थत ध्oस दके श्रमत oष्oक्सेने नस्त समस्त अत्मैश्ठ ,oैनते दभः स्oभoते नस्त समस्त सस क स्oभoैः भगoत् ट च क ेगैःभगoत् ट चैकभेगैः नत स्द्धैः अनन्तैः थ ेग सेoमन अत्मभेगेन अननुस त ट दकल,दo मल केमल अoलेकनेन oश्ठ अह्लदन्त ईषदुन्म लत मुखबुज उद oनर्गतेन दo नन oन्दशेभ जनकेन दo गभ औद सैन्द मधु त अनoधक गु ग oभषतेन अतमने दo भoगर्भे दo ललल ट अम्तेन अखलजन द न्त अट न्त भगoन्तन ध नेगेन दृष्ट्व,

(तदे) भoत: नतस्o अत्मन नतदस च थoस्थत अनुसन्ध "कद भoन्त

न ,मम कुलनाथ, मम कुलदैवत, मम कुलधन, मम भोग ,मम मात , मम पत , मम सर्व,स क्षत् कव
चक्षुष ? कद भगवत् पदबुज्द्व शस ध ष म? कद भगवत् पदबुज्द्व प च क ेग :(तदेकभोग:) तत्द दै प च ष म? कद भगवत् पदबुज्द्व प च श नस्त समस्तेत भोग श:, अपगत समस्त सस क स्वभव: तत्द बुज्द्व प्रवेक्ष म? कद भगवत् पदभुज्द्व प च क ेग :(तदेगभोग:) तत्द दै प च ष म? कद म भगवन् स्वक अतशतल दश अवलोक स्नग्ध गभ मधु ग प च अज्ञ प ष त?" इत भगवत् प च अश वर्ध त्व, तौव अश तत्रस द उपब त भगवन्त उपेत द त् एव भगवन्त शेषभोगे श्र स सन, वैनते दभ सेव मन,

"समस्त प व श्र मते न नम:"

इत प्र ,उत्थ उत्थ पुन: पुन: प्र , अत न्त स ध्व सवन वनत: भत्व, भगवत् प षद ग न कै: द्व पलै: कप स्ने गप्भ दश अवलोकत:,स कु: अभवन्दतै: तैस्तैव अनुमते भगवन्त उपेत श्र मत मलमन्त्रे "(भगवन्) म ऐकन्तक अत न्तक प च क प गह्णष्ठ" इत चमन: प्र ,अत्म न भगवते नवेदोत्!

तते भगवत स्व मेव अत्म सञ्जवनेन अम त श लवत अतप्रेम न्वतेन अवलोकनेन, अवलोक सर्वदेश सर्वकल सर्व वस्थे चद अत न्त शेषभव स्वकत: अज्ञ तश्च, अत न्त स ध्व सवन अनत:,कङ्कर्व :, कत ञ्जलपु : भगवन्त उपसत! ततश्स अत न्त अनुभ मन भवव शेष:, न तश प्र त अन त् कचत् कर्तु दृष्ट स्मर्तु अशक्त:, पुन प शेषभ वमेव चमन:, भगवन्तमेव अवच न्न स्त्रोते रूप अवलोकनेन अवलोक न् अस त!

तते भगवते स्व मेव अत्मसञ्जवनेन अवलोकनेन अवलोक ,स स्मतम ,समस्तक्लेशप न तश सुखव , अत्म ,श्र मत्द वन्दुग श सकत,ध त्व अमत स ग अन्त् नमगन सर्व व: सखम स त!

लक्ष्म पते दप्देश्च द ैगधन े:
ेसै पु समजनष्ट जगद् तर्थ!

प्र च प्रकश तु न: ट म स
स ठ द एष श ग त मन्त्र स :